प्रातः क्लास 9-6-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चे समझते हैं हम स्टुडन्ट्स हैं। बाप के स्टुडन्ट्स। क्या पढ़ रहे हो। हम मनुष्य से देवता बननेलिए ट्युशन पढ़ रहे हैं। कौन ट्युशन ले रहे हैं। हम सभी आत्मायें परमपिता परमात्मा से ट्युशन ले रहे हैं। अभी समझ गये हैं कि हम जन्म व जन्मव अपन को देह समझते थे न कि आत्मा। लौकिक बाप फिर ट्युशन के लिए और जगह भेज देते हैं। सदगति के लिए और जगह भेज देते थे। बाप बूढ़ा हुआ तो फिर उनको वानप्रस्त में जाने दिल होती है। परन्तु वानप्रस्त को कोई जानते नहीं हैं। न गुरुलोग ही जानते हैं। वाणी से परे हम कैसे जा सकते हैं बुधि में नहीं बैठता है कि अभी तो हम पतित हैं। जहां से हम आत्मायें आये हैं वहां तो हम पावन थे। यहां आकर पार्ट बजाते2 हम पतित बन गये हैं। अभी फिर पावन कौन बनावे। पुकारते भी हैं हे पतित-पावन·· गुरु को तो कोई पतित-पावन नहीं कह सकते। गुरु करते हैं फिर भी एक में पूरा निश्चय नहीं बैठता। इसलिए जांच करते हैं ऐसा कोई गुरु मिले जो हमको अपने घर अथवा वानप्रस्त अवस्था में पहुंचावे। इसके लिए बहुत युक्तियां रचते हैं। जहां सुना कि फ्लाने की बहुत महिमा है, उनके बहुत फालोअर्स हैं, वहां भागते हैं। तुमको अनुभव भी सुनाते हैं कि बहुत ढूढ़ा बहुत देखा। फिर भी सेपलिंग जो इस झाड़ का है उनको तुम्हारे ज्ञान का तीर लग जाता है। समझते हैं यह तो क्लीयर बात है। बरोबर तुम वानप्रस्त अवस्था में जाते हो ना। कोई बड़ी बात भी नहीं हैं। टीचर के लिए स्कूल में पढ़ाना कोई बड़ी बात है क्या। भक्तों को क्या चाहिए यह भी किसकोपता नहीं है। अभी तुम बच्चे इस ड्रामा के चक्र को जान गये हो। तुम समझते हो बरोबर बाप ने ही वर्सा दिया था। जो अभी दे रहे हैं। फिर इसी अवस्था में आवेंगे। अभी हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बनते हैं। फिर चक्र लगाकर इस तमोप्रधान अवस्था में आवेंगे। कैसे आवेंगे सो तो तुम बच्चे समझते हो। पहली मुख्य बात है पावन बनने लिए बाप को याद करना। लौकिक बाप तो सभी को याद है। पारलौकिक बाप को कोई नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना सहज ते सहज भी है, कठीन ते कठीन भी है। आत्मा इतना छोटा सितारा है। वह है सम्पूर्ण पवित्र। और आत्मायें हैं सम्पूर्ण अपवित्र। सम्पूर्ण पवित्र का संग तारे, सो तो एक का ही संग मिल सकता है। संग चाहिए जरूर। फिर कुसंग भी मिलता है5 विकार रूपी रावण का। उनको कहा ही जाता है रावण सम्प्रदाय। तुम अभी बन रहे हो रामसम्प्रदाय। तुम राम-सम्प्रदाय बन जावेंगे तो फिर यह रावण सम्प्रदाय न रहेंगे। यह बुधि में ज्ञान है। राम सम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय। राम कहेंगे भगवान को। भगवान ही आकर राम-राज्य स्थापन करते हैं। अर्थात् सूर्यवंशी राज्य स्थापन करते हैं। राम-राज्य भी नहीं कहें। परन्तु समझाने में सहज होता है राम-राज्य और रावण-राज्य। वास्तव में है सूर्यवंशी-राज्य।

अभी बच्चों को कल प्रभात फेरी भी निकालनी है। बाबा आज सालोगन देख लेंगे। सालोगन्स ऐसी हो जो मनुष्यों को चुभ जाये। पर्चे तो तुम्हारे पास ढेर हैं। स्वर्गवासी हो या नर्कवासी। गरीबों को फ्री देना होता हैं। दान भी गरीबों को दिया जाता है ना। तुम्हारा एक छोटा पुस्तक भी है हीरे जैसा जीवन कैसे बने। अभी हीरे जैसा जीवन किसको कहा जाता है, मनुष्य क्या जाने। सिवाय तुम्हारे। लिखना चाहिए हीरे जैसा देवताईजन्म जीवन कैसे बने। देवता अक्षर एड होना चाहिए। तुम फील करते हो हम हीरे जैसा जीवन यहां बना रहे हैं। सिवाय बापके और कोई बना न सके। किताब है बहुत अच्छा। इसमें सिर्फ एक अक्षर एड कर दो नहीं तो मनुष्य समझें नहीं। प्रश्न× कहेंगे क्या हम हीरो बन जावेंगे। मनुष्य हीरो वह समझते हैं जो जेवर में पहना जाता है। आसुरी कोड जैसे जीवन से हीरे देवताओं जैसे जीवनसेकण्ड में प्राप्त कर सकते हैं। बिगर कोड़ी खर्चा। बच्चा बाप के पास जन्म लेता है और वरसे का हकदार बनता है। बच्चे को खर्चा लगता है क्या। गोद में आया और वरसे का हकदार बना। खर्चा तो बाप करते हैं न कि बच्चा। अभी तुम ने क्या खर्चा किया। बाप का बनने में कोई खर्चा लगता है क्या। नहीं। जैसे लौकिक बाप से वरसा लेने में खर्चा नहीं लगता है वैसे पारलौकिक बाप भी वर्सा लेने में खर्चा नहीं लगता है। यह तो बाप बैठपढ़ाते हैं। पढ़ा कर तुमको यह (देवता) बनाते हैं।

तुम कोई छोटे बच्चे तो नहीं हो। बड़े हो। बाप का बनने से बाप राय देते हैं। तुमको अपनी राजधानी स्थापन करनी है। इसमें पवित्र जरूर बनना है। खर्चा तो कुछ भी नहीं लगता। गंगा पर जाते हैं स्नान करने, तीर्थों पर जाते है खर्चा तो करेंगे ना। तुमको बाप का निश्चय हुआ खर्चा लगा क्या। तुम्हारे पास सेन्टर्स पर आते हैं। तुम उनको कहते होअभी बेहद के बाप का वरसा लो। बाप को याद करो। बाबा है ना। बाप खुद कहते हैं मेरा वरसा तुमको चाहिए ना। तुम पतित हो। वरसा लने चाहते हो। पावनदुनिया अथवा विश्व का मालिक बनने। यह भी जानते हो बाप बैकुण्ठ स्थापन करते है। समझदार बच्चे अच्छी रीत समझते हैं। बाप तो सिर्फ कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। और कोई तकलीफ नहीं। कितना सहज है। उस पढ़ाई में खर्चा मितना होता है। यहां खर्चा तो कुछ भी नहीं। आत्मा कहती है हम अविनाशी हैं, यह शरीर विनाश हो जावेगा। बाल-बच्चे आदि सभी विनाश हो जावेंगे। अच्छा फिर इतने पैसे इकट्ठे किये हैंवह क्या करेंगे। ख्याल तो होगा ना। कोई शाहुकार भी होंगे उनका समझो कोई है नहीं, ज्ञान मिलता है तो समझते हैं इस हालत में पैसा क्या करेंगे। पढ़ाई तो है सोर्स ऑफ इनकम। बाप ने बताया था एक ईब्राहीमलिंकन था बहुत गरीब था। रात को जाग कर पढ़ता था। पढ़-पढ़ कर इतना होशियार हो गया जो प्राईमिनिस्टर बन गया। खर्चा लगा क्या। कुछ भी नहीं। बहुत गरीब जो होते हैं उन से गवर्मेन्ट पैसा नहीं लेती है पढ़ने की। ऐसे बहुत पढ़ते हैं उन से फी लेते नहीं। तो वह भी बिगर फी पढ़कर प्राईमिनिस्टर बन गया। कितना बड़ा पद पा लिया। खर्चा कुछ भी नहीं। यह गवर्मेन्ट भी खर्चा कुछ नहीं लेती है। समझते हैं दुनिया में सभी गरीब ही हैं। भल कितना भी शाहुकार लखपति करोड़पति हैं वह भी कहेंगे गरीब हैं। हम उनको शाहुकार बनाते हैं। भल धनकितना भी हो, तुम जानते हो यह तो बाकी थोड़े दिन के लिए है। यह भी मिट्टी में मिल जावेगा। तो गरीब ठहरा ना। सारा मदार है पढ़ाई पर। बाप बच्चों से पढ़ाई का क्या लेंगे। बाप तो दाता मालिक है। बच्चे जानते हैं हम भविष्य में यह बनेंगे। तुम कहेंगे इन्हों का राज्य ही नहीं है। तो फिर बनेंगे कैसे। और मैं आया हूं यह स्थापन करने लिए। बेज में भी यही समझानी है। नये2 स्टुडन्टस निकलते रहते हैं। शिव बाबा कहते हैं हमारे में जो आत्मा है उन में भी तो पार्ट नूंधा हुआ है। हम जो विकारी पतित बने हैं उनको बाप आकर पावन बनाते हैं। पार्ट बजाते हैं कोई नई बात थोड़े ही हैं। यह तो जानते हो 5000वर्ष पहले भी बाप ने विश्व की बादशाही दी थी। मुख्य बात बाप कहते हैं बच्चे मामेकम् याद करो। सम्मुख कहते हैं। रथ मिल गया तो बाप भी आ गया। रथ तो जरूर एक फिक्स होगा ना। बदली थोड़े ही हो सकता है। यह बन बनाया ड्रामा है। बदली हो नहीं सकता। कहते हैं यह जवाहरी कुसे प्रजापिता ब्रहमा बनेगा। समझते हैं यह तो जवाहरी थी। जवाहर एक होती है बनावटी और दूसरी होती है सच्ची। इसमें भी सच्चा जवाहरात बाप देते हैं। तो फिर वह क्या काम आवेंगे। यह है ज्ञान रत्न। इन के सामने उन जवाहरात की कोई मूल्य नहीं। यह भी जवाहरी था, परन्तु जब यह रत्न मिली तो समझा यह जवाहरात कोई का काम का नहीं। यह अविनाशी ज्ञान रत्न एक एक लाख रुपये का है। जितने तुमकोरत्न मिलते हैं। यह ज्ञान ही सच्चे बन जाते हैं। तुम जानते हो बाप यह रत्न देते हैं झोली भरने लिए। यह मुफ्त में मिलती है। खर्चा कुछ भी नहीं। कहीं छतों दिवालों में भी हीरे लगे रहते हैं। उनकी किमत क्या होगी। वैल्य बाद में होती है। वहां तो हीरे जवाहर भी तुम्हारे लिए कुछ नहीं है। यह तो बच्चों को निश्चयहोना चाहिए। मुझने की दरकार ही नहीं। बाबा ने समझाया है यहरूप भी वसंत भी है बाबा छोटा सा रूप है। उनको ज्ञान का सागर कहा जाता है। यह ज्ञान रत्न है। जिससे तुम बहुत धनवान बनेंगे। बाकीकोई अमृत वा पानी आदि की बात ही नहीं। पढ़ाई में पानी की बात नहीं होती। पावन बनने में खर्चा की बात नहीं। तुम ज्ञान सागरके कंठे पर बैठे हो। वह उस पानी में स्नान करते हैं। तुम यहां यह ज्ञान रत्न लेते हो भेंट करो। वहां हरद्वार में क्या2 लगा पड़ा है। कितने बैठे हुये

होते हैं। गंगा स्नान करने। इनमें तो शास्त्र आद पढ़ने करने की कुछ भी दरकार नहीं। पावन बनना है ना। अच्छा जब कि गंगा स्नान पावन बनने लिए करते हैं फिर इतना यज्ञ तप तीर्थ आद क्यों करते हैं। गंगा स्नान से पावनबन गये फिर यहां तो रह न सके। फिर यह वेद शास्त्र आद क्यों पढ़ते। ऐसे तो नहीं कोई वेद पढ़ने सेकोई पावन बन नहीं सकते हैं। कितना भुंझे हुये हैं। भक्ति मार्ग में मनुष्यों की बुधि चलती है। डम हो जाती है। तुमको अभी विवेक मिला है। समझते हो पतित-पावन तो एक ही बाप है। बाकी गंगा स्नान, वेद-शास्त्र आद पढ़ने सेक्या फायदा। तुम पुकारते भी हो कि आकर पावन बनाओ। फिर इन शास्त्रों आद में क्या रखा है। अपने योगबल से पावन बन रहे हो। जानते हो हम पावन बन पावन दुनिया में चले जावेंगे। अभी राईट यह वा वह? इन सभी बातों में बुधि चलनी चाहिए। ड्रामा में यह भक्ति का पार्ट भी होने का ही है। बाप कहते हैं अभी तुमको पावन बन पावन दुनिया में चलना है। जो पावन बनेंगे वही पावन दुनिया में जावेंगे। वहां तो कोई पतित होगा ही नहीं। बाकी नदी तो है ही। तो फिर क्या पावन हो जाते रहेंगे। अर्थ ही नहीं। बिल्कुल फालतू है। भक्ति में शोक कितना है। कितने वेद शास्त्र आद पढ़ते हैं। और ही भक्ति के दुवण में जाकर फस पड़ते हैं। भक्ति की किचड़ है ना। सबसे बड़ी किचड़ है विकार की। जिसमें गले तक सभी फंसे हुये हैं। जो यहां के सेन्टर्स होंगे वह निकल आवेंगे। बाकी थोड़े ही समझेंगे। वह तो दुबण में ही फंसे रहेंगे। जब सुनेंगे तब पिछाड़ी में कहेंगे अहो प्रभु तेरी लीला। आप पुरानी दुनया को नई कैसे बनाते हो। तुम्हारायह ज्ञान अखबारों में बहुत2 जावेगा। साथ यह चित्र-(चित्र=। अखबार में रंगीन छ डाल दो और लिख दो शिव बाबा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा पढ़ाकर स्वर्ग का मालिक यह (ल०ना० बनाते हैं। कैसे? याद कीयात्रा से। याद करते2 तुम्हारी कट उतर जावेगी। पूछते हैं ना रास्ता बताओ। तो तुम खड़े खड़े सभी को रास्ता बताओ। बाप कहते हैं मामेकं याद करो। अपन को आत्मा समझो। घड़ी2 यह याद दिलाकर फिरदेखो इनका चेहरा कुछ बदलता है। नयन पानी से भींगते हैं। तब समझो कुछ बुधि में बैठा है। पहले2 समझानी ही है यह एक बात। पांच हजार वर्ष पहले भी बाप ने कहा है मामेकं याद करो। शिव बाबा आया था तब तो शिव जयन्ति मनाते हैं ना। भारत को स्वर्ग बनाने लिए यही समझाया था मामेकं याद करो। तो तुम पावन बन जावेंगे। छोटी2 बच्चियां भी ऐसे बैठ सुनावे वेहद का बाबा शिव बाबा समझाते हैं। बाबा अक्षर बहुत मीठा लगता है। बाबा और वरसा। इतना निश्चय में बच्चों को रहना है। यह है ह। मनुष्य से देवता बनने का संस्था। देवताओं होते ही हैं पावन। अब बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। मन्मनाभव अक्षर सुने हैं? न सुने हो तो बाप सुनाते हैं। बाप कहते हैं मैं ही पतित पावन हूं। मुझे याद करो तो तुम्हारी खाद निकल जावेगी। फिर सतोप्रधान बन जावेंगे। मेहनत ही यह है। यह के लिए तो सभी कह देते बहुत अच्छा है परन्तु प्राचीन योगी की बात को कोई नहीं जानते। पावन बनने की बातें तुम सुनाते हो तो भी सुनते नहीं। बाप कहते हैं तुम सभी तमोप्रधान पतित बन गये हो। अभी अपन को आत्मा समझ मुझे याद करो। असल हम आत्मायें मेरे साथ थी ना। मुझे तुम बुलाते भी हो गाडफादर आओ। अभी मैं आया हूं तो मेरी मत पर चलो। यह है ही पतित से पावन होने की मत। मैं हूं सर्व शक्ति वान ईश्वर पावन। अभी तुम मेरे को याद करो। इनको ही प्राचीन योग कहा जाता है। क्योंकि तुम तमोप्रधान हो ना। धंधे आद भी मैं भी भतरहो। बाल बच्चे आद भी भल सम्भालो। लेकिन बुधि योग और सब से हटाकर मेरे साथ लगाओ। यह है सबसे मुख्य बात। यह न समझा तो गोया कुछ भी नहीं समझा। ज्ञान के लिए तो कहते हैं बहुत अच्छा। बड़ा अच्छा ज्ञान है। पवित्रता भी अच्छी है परन्तु हम हमेशा के लिए पवित्र कैसे बनें वह बात समझी ही नहीं। देवतायें हमेशा पवित्र थे ना। वह कैसे बने। यह बात पहले2 समझानी है। बाप कहते हैं मुझे याद करो। याद से ही पाप मिट जावेंगे। और तुम देवता बन जावेंगे

नहीं तो सज़ा खावेंगे। ज्ञान जो सुनते हैं उनका विनाश नहीं होता है। प्रजा तो बन ही जावेंगी। बाकी तो पुरुषार्थ करना है हम आत्मा हैं। हमारा बाबा तो बहुत ही मीठा है। उनको हम क्यों नहीं याद करेंगे। बाबा हम तो आपे ही शरण में आये हैं। आप का ही बने हैं, आप का ही वरसा लेंगे। ऐसा सिर्फ शरण में आने से वरसा थोड़े ही बनेंगे। पावन बनना है योगबल की यात्रा से। अरे बाप को याद करना कोई कठीन है। जिससे वरसा मिलता है जन्मसे ही बाबा बाबा कहते आये हैं। बेहद का बाबा तो एक ही है। उनको ... करना है। और कोई तरफ दृष्टि न जाये। बात एक ही है' हरेक को उनसे वरसा लेना है। बाप कहते हैं तुम आत्माएं मेरे बच्चे हो ना। मेरे नहीं तो भला किसके हो। इतनी सभी आत्माओं का बाप कौन है? वह है एक पावन। आत्मा पावन से पतित फिर पावन होती है। पावन तो एक ही बाप बनाते हैं। जिसको सभी याद करते रहते हैं। यहां आबू में भी सन्यासी लोग आते हैं तो पतित-पावन... की धून लगाते हैं, ताली बजाते गाते रहते हैं। अभी तुम बच्चों ने अच्छी रीत समझा है। जानते हो यह रथ है। गऊ मुख भी यह है ना। यह माता है ना। भक्ति मार्ग है ही ढूंढने का मार्ग। यह है सच्चा का मार्ग। बाप कहते हैं तुम भक्ति मार्ग में बेसमझ बन गये हो। ज्ञान है समझ का मार्ग ज्ञान समझ को कहा जाता है एमआबजेक्ट भी है मनुष्य से देवता बनने की। भगवानुवाच है ना भगवान क्या पढ़ावेंगे। भगवान भगवान भगवती ही बनावेंगे। परन्तु तुम अपने को भगवान भगवती कहो यह तो नहीं कहता है। भगवान तो एक ही हैं। परन्तु भगवान पढाते हैं इसलिए भारतवासियों ने नाम रख दिया है। ऊंच ते ऊंच एक भगवान ही है जो तुमको पढ़ा रहे हैं। भगवान की तो महिमा गाते हैं। ज्ञान का सागर सुख का सागर शान्ति का सागर यह गुण इस समय तुम्हारे में भरते हैं। फिर तुम देवता बनेंगे तो देवताई गुण ही रहेंगे। यहां बाप ज्ञान का सागर है तो तुम भी ज्ञान का सागर बनते हो। वहां तुमको ज्ञान सागर नहीं कहेंगे। यहां तुमको अच्छी रीत समझाया जाता है बुधि में बैठता है। बाहर निकलने से फिर भूल जावेंगे। यहां तो बाप सम्मुख बैठ समझाते हैं। वहां सेन्टर्स पर तो तुम भाई बैठ भाईयों को समझावेंगे। डायरेक्ट अभी तुम सुनते हो। इसलिए ही मधुबन की महिमा गाई हुई है। यहां तुम ईश्वरीय परिवार में बैठे हो। बाहर में तो बगुलों से मिलना करना पड़ता है। यहां आने से तुम बाहर का सब कुछ भूल जाते हो। वहां का वायुमंडल की अलग हो जाता है। यहां कुछ भी याद नहीं रहता। बाप और शान्तिधाम सुखधाम ही याद आता है। यही पक्का कर दो। हम शान्तिधाम के वासी हैं। अभी बाप ज्ञान से सुखधाम में जाने वाले हो। यह सिर्फ तुम ही जानते हो। तुम कितनी छोटी मेनारीटी हो। यहां जैसा वायुमंडल कहां भी हो न सके। यहां तो डायरेक्ट बाप से सुनते हो। प्रैक्टीकल में निश्चय बुधि हो बैठते हो। यहां तुम आते ही हो पढ़ने लिए। बाप डायरेक्ट पढ़ा रहे हैं। यह खुशी कोई कम है क्या। फिर बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाने के लिए कल्प2 पढ़ाते हैं। यह भी पक्का याद रहे तो पढ़ना चाहिए ना। भक्ति मार्ग ही अलग है। उसमें तो अनेक मंदिर ठिकाणे आद हैं' कितना भटकना पड़ता है। यहां भटकने की कोई बात नहीं। बाप कहते हैं एक कौड़ी भी खर्चा न करो। फिर श्री मत पर चलो। एक पैसा भी मत दो। मैं तो बेहद का बाप हूं। तुम से यह पैसा कैसे लेंगे। पढ़ाने और योग सिखलाने लिए पैसा लेंगे क्या। मैं पैसा क्या करूंगा। मुझे अपने लिए तो महल आद बनाना नहीं है। हम तो पढ़ाने लिए आते हैं। शिव बाबा पढ़ाते हैं वह तो है निराकार। वह तो वानप्रस्थ में ही रहते हैं। मकान आद कुछ है नहीं। मकान में तुम बैठे हो पढ़ने लिए। फिर आवेंगे नई दुनिया में। बाप कहते हैं तुम तो हमारे बच्चे हो ना। कोई से से भी मांगने की दरकार नहीं। तुम सिर्फ बाप से ही मांगते रहो। उनको तो पर्ज है। दलहलाल का कुंआ भरपूर है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को याद प्यार गुड मार्निंग और नमस्ते।

*:::***:::*